मीरा

कवयित्री परिचय :- मीरा का जन्म जोधपुर के पास कुड़की गाँव में 15०3 ईस्वी में हुआ। 13 वर्ष की अवस्था में उनका विवाह मेवाड़ के महाराणा साँगा के पुत्र भोजराज से हुआ। उनके विवाह के कुछ समय बाद ही पहले पति फिर पिता और एक युद्ध में श्वसुर की मृत्यु हो गयी। सांसारिक जीवन से निराश मीरा वृदांवन चली गयी और कृष्ण के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित हो गयी।

मीरा भक्ति काल की प्रसिद्ध कवयित्री हैं। मीरा को हिंदी और गुजराती की कवयित्री माना जाता है। आप की भक्ति दैन्य और माधुर्य भाव की है। मीरा के पदों में राजस्थानी ,ब्रज, गुजराती का मिश्रण है। स्थान स्थान पर पंजाबी ,खड़ी बोली, पूर्वी भाषा का भी प्रयोग हुआ है।

पाठ परिचय :- कवयित्री का कहना है आप अपने भक्तों के कष्ट दूर करते हैं। आप ने द्रोपदी की लाज की रक्षा की ,भक्त प्रह्लाद की रक्षा की,उसी प्रकार प्रभु आप मेरे भी कष्ट दूर करो।

मीरा कृष्ण की नौकरानी बनना चाहती हैं। प्रभु के दर्शन ,भक्ति पाना चाहती है। मुरली मनोहर श्री कृष्ण से यमुना के किनारे मिलना चाहती है।

हरि आप हरो जन री भीर
द्रोपदी री लाज राखी,आप बढायो चीर।
भगत कारण रुप नरहरि धरयो आप सरीर।।
बूढतो गजराज राख्यो ,काटी कुण्जर पीर।
दासी मीरा लाल गिरधर,हरो म्हारी भीर।

शब्दार्थ:- हरि -श्री कृष्ण , हरो – दूर करो , भीर – दु:ख , बढ़ायो – बढ़ाया, चीर – वस्त्र (साड़ी) , धरयो – धारण किया , बूढतो – डूबते हुए ,राख्यो – रक्षा की , कुञ्जर – हाथी ,पीर – दु:ख , गिरधर – गोवरधन पर्वत को धारण करने वाले

व्याख्या :- मीरा अपने आराध्य देव कृष्ण से कहती हैं, प्रभु – आप अपने भक्तों के दु:ख दूर करते हो । आपने द्रोपदी की लज्जा की रक्षा की। उसकी साड़ी को बड़ा करके, जब दु:शासन ने भरी सभा में उसका चीर हरण करना चाहा। आपने अपने भक्त प्रह्लाद की भी रक्षा की, नृसिंह का रूप धारण किया। आपने डूबते हुए गजराज (हाथी) की मगरमच्छ से रक्षा की । मीरा कहती हैं गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाले प्रभु श्री कृष्ण मैं आपकी दासी हूँ, मेरे भी दु:ख दूर करो।

भाषा सौन्दर्यः-

1 भाषा सरल व सहज , ब्रज ,राजस्थानी भाषा के शब्दों का प्रयोग

2 पद छंद

3 तुकान्त रचना

4 भक्ति भाव ,शान्त रस

5 गीतात्मक शैली

6 विभिन्न उदाहरणों से मीरा ने कहा है -आप अपने भक्तों के कष्ट दूर करते हो, इसलिए दृष्टान्त अलंकार

7 काटी कुण्जर में अनुप्रास अलंकार

स्याम म्हाने चाकर राखो जी ।

गिरधारी लाल म्हाँने चाकर राखोजी ।

चाकर रहस्यू बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यू ।

बिन्दरावन री कुंज गली में गोविंद लीला गास्यू ।

चाकरी में दरसण पास्यू सुमरण पास्यू खरची ।

भाव भगती जागीरी पास्यू तीनू बाताँ सरसी ।

मोर मुकुट पीताम्बर सौहे गल वैजन्ती माला ।

बिन्दरावन में धेनु चरावे मोहन मुरली वाला ।

ऊँचा ऊँचा महल बणाव बिच बिच राखूँ बारी ।

साँवरिया रा दरसण पास्यूँ पहर कुसुम्बी साड़ी ।

आधी रात प्रभु दरसण दीज्यो जमनाजी रे तीरां ।

मीरां रख प्रभु गिरधर नागर हिवड़ो घणो अधीराँ ।

शब्दार्थ : - म्हाने – मुझे , चाकर – नौकर , गिरधारी – गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाला ,रहस्यूं – रहूँगी ,दरसन – दर्शन , कुंज – बाग , पीताम्बर – पीला वस्त्र , सौहे – शोभा देना , धेनु – गाय , साँवरिया – सावले -सलोने , बारी – फुलवाड़ी , कुसुम्बी – लाल (केसरिया) , तीरा – किनारे, हिवड़ो - हृदय , अधीरा – व्याकुल

व्याख्या :- प्रभु आप मुझे अपना नौकर रख लो। गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाले प्रभु आप मुझे अपना नौकर रख लो । आप की नौकरी करूँगी तो बाग लगाऊँगी और आप जब सुबह बाग में घूमने आओगे तो मैं सुबह उठ कर आपके दर्शन करुँगी । वृंदावन के बाग और गलियों में मैं प्रभु का गुणगान करुँगी । प्रभु की नौकरी करते हुए मैं प्रभु के दर्शन प्राप्त करुँगी । खर्ची के रूप में मुझे प्रभु का स्मरण प्राप्त होगा । मुझे भक्ति रूपी जागीर प्राप्त होगी। इस प्रकार आपकी नौकरी कर के मेरी तीनों बातें पूरी हो जायेंगी ।प्रभु श्री कृष्ण ने मोर मुकुट धारण किया है । उनके शरीर पर पीला वस्त्र सुशोभित है । उनके गले में वैजन्ती फूलों की माला है, मुरली वाले मोहन अर्थात् श्री कृष्ण वृन्दावन में गायें चराते हैं । मैं ऊँचे – ऊँचे महल बनाऊँगी और बीच – बीच में फुलवारी लगाऊँगी। सावले सलौने प्रभु के दर्शन मैं केसरिया साड़ी पहन कर करुँगी । प्रभु आप मुझे आधी रात को यमुना नदी के किनारे पर दर्शन देना । मीरा कहती हैं कि गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाले प्रभु , आप मुझे दर्शन दें , मेरा हृदय बहुत व्याकुल है ।

भाषा सौन्दर्य :-

1 भाषा सरल , राजस्थानी भाषा के शब्दों का सुन्दर प्रयोग जैसे पास्यू गास्यू हिवडो आदि

2 **पद छंद**

3 **तुकान्त रचना**

4 **माधुर्य भाव**

5 **भाव-भगती , मोर मुकुट , मोहन मुरली , पास्यूँ पहर में अनुप्रास अलंकार**

6 **ऊँचा- ऊँचा , बिच – बिच पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार**

प्रश्नोत्तर

प्रश्न- 1 **पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती किस प्रकार की है?**

उत्तर – मीरा का कहना है आप अपने भक्तों की पीड़ा को दूर करते हैं। दु:शासन द्वारा द्रोपदी के चीर हरण करने पर आप ने उसकी लज्जा की रक्षा की , आपने नरसिंह अवतार धारण करके प्रह्लाद की रक्षा की। केवल इतना ही नहीं, आपने मगरमच्छ से हाथी की रक्षा की, क्योंकि आप अपने भक्तों की पीड़ा दूर करते हैं। प्रभु आप मेरी भी पीड़ा दूर करो ।

प्रश्न-2 **दूसरे पद मे मीराबाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती है ?**

उत्तर – मीराबाई श्याम की चाकरी अनेक कारणों से करना चाहती है । वो श्री कृष्ण के दर्शन पाना चाहती है।

वृंदावन के बागों और गलियों में प्रभु का गुणगान करना चाहती है । प्रभु को स्मरण करना चाहती है और प्रभु की भक्ति में डूब जाना चाहती है अर्थात् दास्य भाव की भक्ति से परिपूर्ण है मीरा ।

प्रश्न-3 **मीरा ने श्री कृष्ण के रूप सौन्दर्य का वर्णन कैसे किया है ?**

उत्तर – श्री कृष्ण के रूप सौन्दर्य का वर्णन करते हुए मीरा कहती है प्रभु के मस्तक पर मोर पंखों का बना मुकुट सुशोभित है। प्रभु के तन पर पीले वस्त्र सुशोभित हैं तथा प्रभु ने वैजयंती फूलों की माला अपने गले में धारण की है। मुरली मनोहर कृष्ण वृंदावन में गायें चराते हैं ।

प्रश्न – 4 **मीराबाई की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए ।**

उत्तर – मीरा ने मुख्य रूप से ब्रज भाषा का प्रयोग किया है , इसके साथ-साथ आपने राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया है ।आपके पदों में तद्भव शब्दों की प्रधानता है । जैसे हिवडो – राजस्थानी दरसन , सुमरण आदि तद्भव शब्द । मीरा के पदों में आडम्बर नहीं है । शान्त रस प्रधान है तथा भक्ति भाव है । दूसरे पद में माधुर्य गुण की प्रधानता है । मीरा के पाठ्य पुस्तक के पद तुकान्त हैं तथा उसमें अनुप्रास अलंकार का सुन्दर प्रयोग है, काटी कुण्जर , मोहन मुरली में अनुप्रास अलंकार , मीरा ने कृष्ण के लिए अनेक पर्यायवाची शब्दों का सुन्दर प्रयोग किया है जैसे -हरि , गिरधर , स्याम , गोविन्द , साँवरिया , मोहन आदि ।

प्रश्न – 5 **मीराबाई श्री कृष्ण को पाने के लिए क्या – क्या कार्य करने को तैयार है ?**

उत्तर – मीरा श्री कृष्ण को पाने के लिए उसकी चाकरी करने के लिए तैयार है । कृष्ण के लिए महल बनाना चाहती है , बाग बगीचे लगाना चाहती है तथा वृंदावन की कुँज गलियों में श्री कृष्ण का यशगान करना चाहती है।

प्रश्न -6 **मीरा ने अपने पदों में प्रभु को क्या – क्या नाम दिए हैं ?**

उत्तर – मीरा ने अपने पदों में प्रभु को अनेक नाम दिये हैं जैसे – हरि , गिरधर , स्याम , गिरधारी , गोविंद मोहन , मुरलीवाला , साँवरिया आदि ।

प्रश्न – 7 **कृष्ण की चाकरी करने से मीरा को कौन – कौन से तीन लाभ मिलेंगे ?**

उत्तर - मीरा जब कृष्ण की चाकरी करेगी तो उसे तीन लाभ प्राप्त होंगे । वो कृष्ण के दर्शन प्राप्त करेंगी , खर्ची के रूप में प्रभु का स्मरण प्राप्त होगा तथा कृष्ण की चाकरी करने पर उसे प्रभु की भक्ति रूपी जागीर प्राप्त होगी ।

प्रश्न – 8 **मीरा आधी रात को कृष्ण के दर्शन कहाँ पाना चाहती है ?**

उत्तर- मीरा आधी रात को श्री कृष्ण के दर्शन यमुना के तट पर पाना चाहती है।